

# भेंगापन का इलाज मुश्किल नहीं है

अफसाना पटान

**सा**मान्य दृष्टि में हमारी दोनों आंखों का संचालन एक साथ होता है और वे तालमेल से काम करती हैं। किसी वस्तु को देखने के लिए आंखें उस बिंदु पर एक साथ केन्द्रित हो जाती हैं। भेंगापन वह अवस्था है जिसमें दोनों आंखें एक साथ काम नहीं करती हैं। आम तौर पर यह अवस्था एक्सट्रा-ऑक्यूलर मांसपेशी (यह आंखों के संचालन को नियंत्रित करती है) के समन्वय में त्रुटि के कारण होती है। इससे दोनों आंखों को एक ही बिंदु पर टिकाने में बाधा उत्पन्न होती है और सामान्य दृष्टि बाधित होती है।

हमारे चेहरे पर दो आंखें कुछ दूरी पर स्थित होती हैं। इस कारण से हमारे सामने रखी वस्तु को दोनों आंखें थोड़ा अलग-अलग कोण से देखती हैं बाईं आंख थोड़ा बाईं ओर से तथा दाईं आंख थोड़ा दाईं ओर से देखती है। इसके बाद दोनों आंखों से संकेत मस्तिष्क तक पहुंचते हैं और मस्तिष्क इन दोनों दृश्यों को मिलाकर एक चित्र बनाता है। चूंकि दोनों आंखों ने थोड़ा अलग-अलग देखा है इसी कारण हमें वस्तु की साइड भी नज़र आती है और हम गहराई को महसूस करते हैं।

भेंगापन से पीड़ित व्यक्ति जब अपनी दोनों आंखों से किसी वस्तु को देखता है तो उसकी दोनों आंखों का मेल एक बिंदु पर नहीं होता और दोनों आंखें तालमेल से काम नहीं करती हैं। आम तौर पर इस तरह के व्यक्ति आंखों में तालमेल नहीं होने के बावजूद आंखों के मेल को तब तक बनाए रख सकते हैं, जब तक वस्तु स्थिर है। इस बीमारी की वजह से व्यक्ति वस्तु को तो देख पाते हैं लेकिन गहराई को महसूस नहीं कर पाते हैं।

भेंगापन कई तरह के होते हैं। कभी एक आंख लगातार



भटक रही होती है तो कभी किसी वस्तु को देखने पर आंख भटकती है। जैसे यदि कोई वस्तु बाईं ओर रखी है और उसे बाईं ओर देखना है तो भेंगी आंख की पुतली दाईं ओर ज़्यादा जाएगी बजाय बाईं ओर के। उसी तरह एक और उदाहरण है कि यदि कोई वस्तु सामने रखी हुई है तो भेंगापन

की वजह से वह वस्तु तो दिखाई देगी लेकिन दोनों आंखों की पुतलियां बीच में आ जाएगी। ठीक उसी तरह जिस तरह हम अपनी दोनों आंखों से नाक को देखने की कोशिश करते हैं।

भेंगापन में वस्तु दिखाई तो देती है लेकिन उसकी दूरी का आभास नहीं होता है। चूंकि दोनों आंखें एक ही बिंदु पर टिकती नहीं हैं, इसलिए कई बार ऐसे लोगों को दोनों आंखों से अलग-अलग दृश्य दिखाई देते हैं। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क कई बार दिखाई देने वाले किसी एक दृश्य को नज़रअंदाज़ करने लगता है।

भेंगापन मानसिक तौर पर तो क्षति पहुंचाता ही है लेकिन जिस्मानी तौर पर भी यह बहुत तकलीफदायक है क्योंकि भेंगापन की वजह से व्यक्ति उस एक सामान्य आंख का उपयोग करता है और दूसरी भटकने वाली आंख को नकारता है। इस वजह से सामान्य आंख पर ज़्यादा ज़ोर पड़ता है। चूंकि व्यक्ति देखने के लिए केवल एक आंख का इस्तेमाल कर रहा है, उसे वस्तु की सही दूरी और गहराई का आभास भी नहीं होगा। इस तरह के व्यक्तियों को सामान्य व्यक्तियों की तरह जीवन जीने में कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

भेंगापन की वजह से कई लोग हीनभावना के शिकार होते हैं और उन्हें व्यक्तिगत छवि के साथ-साथ मानसिक

क्षति भी झेलना पड़ती है। यह बीमारी बच्चों में ज़्यादा पाई जाती है। कई बार इस तरह के बच्चों का स्कूल में मज़ाक बनता है और वे स्कूल जाने से डरते हैं। साथ ही उनके लिए सामाजिक और जिस्मानी तौर पर भी सामान्य जीवन जीना मुश्किल होता है।

इस तरह के लक्षण बचपन से ही मौजूद होते हैं और बड़े होने तक युवा यह सीख जाते हैं कि जिस आंख से सामान्य दिखाई देता है उसी से देखना है न कि भेंगी आंख से। लेकिन यदि वयस्क को किसी मानसिक क्षति के कारण बड़ी उम्र में यह बीमारी हो जाए तो वह ऐसा नहीं कर पाता है क्योंकि उसे दोनों आंखों से देखने की आदत होती है और वह भेंगी आंख से दिखाई देने वाले चित्र को नज़रअंदाज़ नहीं कर पाता है और इसी कारण उसे दो-दो चित्र दिखाई देते हैं।

भेंगापन क्यों होता है, इसका कारण अच्छी तरह तो पता नहीं है लेकिन यह ज्ञात है कि छः मांसपेशियां हमारी आंखों के संचालन का नियंत्रण करती हैं। इनमें से चार मांसपेशियां हमारी आंख के ऊपर-नीचे होने का संचालन करती हैं और दो मांसपेशियां आंखों के आजू-बाजू होने का। ये सब मांसपेशियां अपने द्वारा किए गए काम के संकेत मस्तिष्क तक पहुंचाती हैं। अगर इनमें से कोई एक भी मांसपेशी सही तरह से काम नहीं करती है तो इसकी वजह से भेंगापन होता है। कभी-कभी मस्तिष्क में क्षति भी भेंगापन के लिए ज़िम्मेदार होती है। भेंगापन से सम्बंधित शोधों से यह पता चलता है कि यह अवस्था छोटी उम्र के बच्चों में अधिक देखने को मिलती है।

भेंगापन ऐसी कोई बड़ी बीमारी नहीं है कि समय रहते

ठीक न हो सके। समय रहते इसका इलाज हो जाना चाहिए ताकि भेंगापन को ठीक किया जा सके। जिन बच्चों में भेंगापन की शिकायत होती है उनके अभिभावकों को इस लक्षण को पहचान कर जल्द से जल्द डॉक्टर से सलाह लेकर इलाज कराना चाहिए ताकि बच्चा सामान्य जीवन जी सके। भारत में यह बीमारी बहुत आम है। और इसका इलाज भी बहुत आसान और सस्ता है। भेंगापन का इलाज तीन प्रकार से होता है। पहला चश्मा लगाकर, दूसरा आंखों की एक्सरसाइज़ द्वारा और तीसरा सर्जरी द्वारा।

भेंगापन के लक्षणों को पहचान कर डॉक्टर व्यक्ति का इलाज करते हैं। भेंगापन का सबसे जाना-पहचाना इलाज है एक आंख को बंद करके उस आंख से देखने को मजबूर करना जिसमें दिक्कत है। इस इलाज में डॉक्टर व्यक्ति की सामान्य आंख को ढंक देते हैं और भटकने वाली आंख को सही चश्मा लगाकर देखने के लिए मजबूर करते हैं। तब धीरे-धीरे मरीज़ भटकने वाली आंख से देखने लगता है। यह इलाज बचपन में ही शुरू कर दिया जाए तो बेहतर होता है क्योंकि भेंगापन की वजह से कई बार व्यक्ति उस आंख का उपयोग करते हैं जो सामान्य होती है और समय के साथ भटकने वाली दूसरी आंख का उपयोग करना लगभग बंद कर देते हैं। यह अवस्था तब ज़्यादा देखी गई है जब मरीज़ की उम्र कम होती है। चूंकि असामान्य आंख से नहीं देखने की वजह से केवल एक आंख द्वारा मस्तिष्क तक संकेत पहुंचता है इसके कारण दिखाई देने वाली वस्तु या दृश्य कितनी दूरी पर है, उसकी गहराई क्या है, का अनुमान मात्र रह जाता है। इस कारण दुर्घटनाएं भी हो सकती हैं।

*(स्रोत फीचर्स)*